







# संपादकीय

## बलात्कार और हिंसा पर कब टूटेगी समाज की चुप्पी?

दुनियाभर में प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है, जो सही मायनों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है। यह दिन लैंगिक समानता में तेजी लाने के लिए कार्रवाई के आह्वान का भी प्रतीक है। हालांकि चिंता का विषय यही है कि जिस 'आधी दुनिया' के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है, उसी आधी दुनिया को जीवन के हर मोड़ पर भेटभाव या अपराधों का सामना करना पड़ता है। यदि इसे भारत के ही संदर्भ में देखें तो शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब 'आधी दुनिया' से जड़े अपराधों के मामले देश के कोने-कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम सिर्फ पुलिस-प्रशासन को कोसने और संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालने या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन करने की रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं तो आए दिन होती ही रहती हैं। देश में कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर बीते कुछ वर्षों में कई तरह के कदम उठाने और समाज में 'आधी दुनिया' के आत्मसम्पादन को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मर्यादा हनन या फिर अपहरण अथवा क्सरता, 'आधी दुनिया' के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? इसका एक बड़ा कारण तो यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वो कड़ी कार्रवाई नहीं हो रही है, जिसके बो हकदार हैं और इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि महज कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने से रहे, जब तक उनका ईमानदारीपूर्वक कड़ाई से पालन न किया जाए। ऐसे मामलों में पुलिस-प्रशासन की भूमिका भी अनेक अवसरों पर संदिग्ध रहती है। पुलिस किस प्रकार ऐसे अनेक मामलों में पीड़िताओं को ही परेशान करके उनके जले पर नमक छिड़कने का कार्य करती है, ऐसे उदाहरण अक्सर सामने आते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के मद्देनजर अपराधियों के मन में पुलिस और कानून का भय कैसे उत्पन्न होगा और कैसे महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी की उम्मीद की जाए? जरूरत इस बात की महसूस की जाने लगी है कि पुलिस का लैंगिक दृष्टि से संवेदनशील बनाया जाए ताकि पुलिस पीड़ित पक्ष को पर्याप्त संबल प्रदान करे और पीड़िताएं अपराधियों के खिलाफ खुलकर खड़ा होने की हिम्मत जुटा सकें, साथ ही जांच एजेंसियों और न्यायिक तत्र से भी ऐसे मामलों में तत्परता से कार्रवाई की अपेक्षा की जानी चाहिए। ऐसी घटनाओं पर अंकुश के लिए समय की मांग यही है कि सरकारें मशीनरी को चूस्त-दुरुस्त बनाने के साथ-साथ प्रशासन की जवाबदी ही सुनिश्चित करें कि यदि उनके क्षेत्र में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के मामलों में कानून का अनुपालन सुनिश्चित नहीं हुआ तो उन पर सख्त कार्रवाई की जाए।

बिहार में विधानसभा चुनाव इसी वर्ष अक्टूबर-नवम्बर महीने में होंगे। हालांकि, उससे महीनों पहले राज्य में धार्मिक और राजनीतिक सरगर्मियाँ तेज हो चुकी हैं। कहीं एनडीए और यूपीए एक दूसरे के खिलाफ ताल ठोकते प्रतीत हो रहे हैं तो कहीं उनके गठबंधन के अपने ही साथी एक-दूसरे को रणनीतिक मात देते हुए अपनी सीटें बढ़ाने को लेकर बेताब नजर आ रहे हैं। इस नजरिए से भाजपा-जदयू की धींगमुश्ती और राजद-कांग्रेस की अंदरूनी कुश्ती के बीच चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की

जन सुराज पार्टी सबके बना ए खेल बिगाड़ ही है। एक तरफ जहां धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक न्याय के वोटों का बिखराव तय माना जा रहा है, वहीं हिंदुत्व का नया जनज्वार यहां भी पैदा होती दिखाई दे रही है। इससे जदयू के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कम, लेकिन पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और उनके समर्थक ज्यादा परेशान हैं। इस बीच बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री जब अपने हिंदू राष्ट्र के एजेंडे के साथ बिहार पहुंचे, तो रही सही कसर पूरी हो गई। क्योंकि उनका हर्मुठ धार्मिक अंदाज

बिहारियों पर भी अपना छाप छोड़ा ही।  
उधर, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत सुपौल में और आर्ट ऑफ लिविंग के श्रीश्री रविशंकर भी पटना में यानी राज्य में मौजूद हैं। इससे धीरेंद्र शास्त्री के गोपालगंज में पांच दिवसीय हनुमत कथा की समां बंध चुकी है। वहाँ, बिहार में हिंदुत्व की समां बंधने से सियासी दलों की बेचैनी भी बढ़ चुकी है। दरअसल, अपने हिंदुत्व का बिगुल फूंकते हुए बागेश्वरधाम सरकार धीरेंद्र शास्त्री न कहा है कि वह किसी राजनीतिक दल के पक्षपात्र नहीं बल्कि दिन धर्म के लिज्जपात्र हैं।

के प्रचारक नहीं बल्कि हिन्दू धर्म के विचारक हैं। पंडित शास्त्री का यह कहना कि वह अब सनातनियों को झुकने नहीं देंगे, हिंदुओं की आबादी घटने नहीं देंगे, और भारत के पहले ही बहुत टुकड़े हो चुके हैं, इसलिए अब भारत के और टुकड़े होने नहीं देंगे, को सुनकर हिन्दू गदगद हैं। वहीं, पंडित शास्त्री ने सवालिया लहजे में यह पूछकर अपना धार्मिक एजेंडा स्पष्ट कर दिया है कि ईसाइयों के हितचिंतक 95 देश हैं, इस्लामी मतावलम्बियों यानी मुसलमानों के हितचिंतक 65 देश हैं, लेकिन हिंदुओं का हितचिंतक कौन देश है? उन्होंने अपनी

# ਕੁਰ ਏਵਾਂ ਆਕਾਂਤਾ ਮੁਗਲ ਸ਼ਾਸਕ ਹਮਾਰੇ ਆਦਰ්ਥ ਕੈਂਸੇ?

मुगल बादशाह औरंगजेब की रूरता, अत्याचार एवं यातनाएँ एक बार फिर बॉलीवुड की फिल्म छावा के कारण सुखियों में हैं। इस बार मामला सिर्फ इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं है बल्कि राजनीति में भी गर्मा गया है। समाजवादी पार्टी के नेता अबू आजमी के बयान ने महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल ला दिया है एवं देश के बहुसंय समाज की भावनाओं को आहृत किया है। भारत में आज भी एक ऐसा वर्ग है जो इस्लामिक कटूरता के साथ जुड़ने में गर्व एवं गौरव की अनुभूति करता है, भले ही इससे देश की एकता एवं अखण्डता क्षत-विक्षत होती हो। इस्लाम के नाम पर जिसने हजारों हिंदू मंदिरों को धर्सत किया, तलवार की नोक पर बड़ी संया में लोगों को जबरन मुसलमान बनाया, ऐसे रूर एवं सांप्रदायिक शासक औरंगजेब को नेकदिल और महान शासक बताना, आखिर किस तरह की सोच है?



भारत के अतीत को जगन्न्य अपराधों, कटूरतावादी सोसोच एवं यातनाओं से संचिने वाले मुगल शासकों के प्रति यह कैसा मोह एवं ममत्व है? हिन्दू धर्म एवं संस्कृति पर आक्रमण करने वाले हमारे आदर्श कैसे हो सकते हैं? भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं समुद्धि को कुचलने वाले महान् शासक कैसे हो सकता है? इन प्रश्नों को लेकर देशभर में छिड़ी बहस हमें आत्मावलोकन एवं मंथन का अवसर दे रही है। फिल्म 'छावा' कोरी फिल्म ही नहीं, हिन्दुओं को संगठित करने का अधियान है, जिसने औरंगजेब के कर्त्त्व एवं बर्बर चरित्र को प्रस्तुत किया है, यह फिल्म मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक और छत्रपति शिवाजी महाराज के बड़े बेटे संभाजी महाराज की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में संभाजी के साहस, बलिदान और औरंगजेब के अत्याचारों को दिखाया गया है। संभाजी को औरंगजेब ने छत्पूर्वक 1689 में करूरता से मरवा दिया था, जिसे फिल्म में भावनात्मक ढंग से पेश करने की सफल एवं सार्थक कोशिश हुई है। इस फिल्म में समाजवादी पार्टी के नेता और महाराष्ट्र विधायक अबू आजमी ने इतिहास को गलत ढंग से पेश करने का आरोप लगाते हुए औरंगजेब की तारीफ करके विवाद को और हवा दे दी। आजमी ने कहा, औरंगजेब करूर शासक नहीं था। उसने कई मंदिर बनवाए और उसके शासन में भारत सोने की चिड़िया था। आजमी ने यह भी दावा किया कि औरंगजेब और संभाजी के बीच की लड़ाई धार्मिक नहीं, बल्कि सत्ता की थी। इस तरह मुगल आक्रांताओं

की तारीफ करना सपा के डीएनए में है। हो सकता है आजमीन का यह औरंगजेब प्रेम एवं मुस्लिम कट्टुरतावादी सोच हो, लेकिन औरंगजेब ने संभाजी महाराज को 40 दिनों तक जो यातनाएं दीं, वह क्या थी? उनकी आंखें निकाली गईं, जीभ काटी गईं, उनके शरीर को लहूलुहान करके उस पर नमक छिड़का और फिर उनकी हत्या कर दी गई, इस तरह कर्कुरता एवं बर्बरता बरतने वाले शासक को कैसे आदर्श कहा जाये? असंख्य महिलाओं एवं बच्चों पर अत्याचार करना, जबरन धर्म परिवर्तन करना, हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, देश की समृद्धि का गलत उपयोग करना कैसे प्रेरणास्पद हो सकता है?

औरंगजेब पोत राज्यों, राजपूताना और मराठा शासकों के परिवारों का अपहरण कर लेता था और उन्हें बंधक बना लेता था। ताकि वह निर्विरोध शासन करते हुए सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य कर सके। उसने सभी गैर-मुस्लिम प्रजा और पोत राज्यों से धार्मिक असहिष्णुता कर जजिया वसूला। औरंगजेब एक असहिष्णु, कर्कुर एवं कट्टुरपंथी था और उसकी कट्टुरता के कारण करोड़ों लोगों को कष्ट सहना पड़ा। शांति और बहुसंस्कृतिवाद की भूमि भारत में ऐसे अत्याचारी को आदर्श नहीं बनाया जाना चाहिए। यह पहली बार नहीं है जब औरंगजेब जैसे मुगल शासकों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन उमड़ा हो, जब दिल्ली की एक सड़क का नाम औरंगजेब रोड से बदलकर एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर रखा गया था, तब भी बहुत हाय-तौबा मचाई गयी थी। उस समय भी अनेक

लोगों ने औरंगजेब को महान शासक बताया था। जबकि इतिहासकारों ने भी दर्ज किया है छल से छत्रपति संभाजी को पकड़ने के बाद औरंगजेब ने अत्याचार एवं अमानवीयता की सभी हद पार करते हुए जुल्म किए। औरंगजेब छत्रपति संभाजी को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर कर रहा था लेकिन छत्रपति ने सब प्रकार के कष्ट सहे लेकिन इस्लाम कबूल नहीं किया। जब फिल्मकार ने इस सच को सिनेमा के माध्यम से सबके सामने रखा तो अबू आजमी ने सच को स्वीकारने की बजाय इतिहास को ही झुटालाने का प्रयास किया। उनके बयान की पक्ष-विपक्ष सबने आलोचना की है। कुल मिलाकर, औरंगजेब की तारीफ करने पर चौतरफा घिरे सपा विधायक अबू आजमी को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया। उनके खिलाफ दो एफआईआर भी दर्ज की गई हैं जब मामला और बिगड़ गया तो अबू आजमी ने माफी मांगी। हालांकि, उनका कहना है कि उन्होंने जो कहा, वह इतिहासकारों के हवाले से कहा। लेकिन बड़ा प्रश्न है कि वे कौन से इतिहासकार हैं जिनका हवाला अबू आजमी दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि अबु जाजी सरीखे कुछ चाटुकार एवं चारण लोग इतिहासकारों में भी हुए हैं, काग्रेस के शासन में ऐसे इतिहासकारों से मुगल शासन को महिमामंडित करके लिखवाया गया एवं स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर हिन्दुस्तान की रग-रग में उतारा गया है। औरंगजेब जैसे तानाशाही शासकों के कर्त्तव्य चेहरे को छिपाने के लिए झूठे-सच्चे कुछ किस्सों का सहारा लिया है। परंतु ये फर्जी इतिहासकार सच को छिपा नहीं सके। सिद्धांत, सच और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की ऐसी कोशिशों से बहुत नुकसान हो चुका है, अब इन मनसूबों को कामयाब नहीं हाने दिया जा सकता। सत्य को ढका जाता रहा है पर स्वीकारा नहीं गया। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं, भ्रम पालते हैं, झूठ एवं फेरब के सहारे गलत को सही ठहराने की कुचेष्ठा करते हैं। शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके बेटे संभाजी ने मराठा साम्राज्य को संभाला। उन्होंने स्वराज्य के संकल्प को ही आकार नहीं दिया बल्कि एक नवीन राज्य निर्मित किया एवं एक नवीन महत्तर महाराष्ट्र को पुनर्जीवित किया। मराठों में साहसिक वीरता, उत्कृष्ट सहनशीलता, घोर निराशा में आशा की भावना, आत्मविश्वास, उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ सैनिक नैतिक बल, आत्म बलिदान, राष्ट्रीय और देशप्रेम की उत्कृष्ट भावना जैसे गुण विकसित किए और इससे वे इतने शक्तिशाली हो गए कि आगामी 3 पीढ़ियों में वे उत्तरी भारत में विजेता के रूप में पहुंच गए। छत्रपति शिवाजी एवं उनके वंशज देश के अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचलने की हर कोशिश को नाकाम करते रहे हैं। औरंगजेब की कर्तृता एवं सिर्फ दुश्मनों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके शिकार उसके भाई और पिता भी हुए। इतिहासकार इरफान हबीब ने औरंगजेब की कर्तृता के अनेक किस्सों को उजागर करते हुए बताया कि मुगल सत्ता पाने की लालच में औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को जेल भिजवाया। फिर दारा शिकोह को जंग में हराया। हालांकि जंग हारने के बाद दारा मैदान छोड़कर भग गया था। लेकिन औरंगजेब ने दारा को गिरफ्तार करवाया और षड्यंत्र रचकर उसकी गर्दन कलम करवा दी। औरंगजेब सिर्फ दारा शिकोह की हत्या से खुश नहीं हुआ। उसने हत्या की बाद कर्तृता की हदें भी पार की। एक भाई के साथ ऐसी कर्तृता भारतीय इतिहास में देखने को नहीं मिलती। उसने दारा का कटा हुआ सिर जेल में बंद पिता को भेजा। मुगल शासक औरंगजेब को लेकर महाराष्ट्र से शुरू हुई बयानबाजी की आंच समूचे देश में पहुंच गयी है। हिन्दुओं में गहरा आक्रोश एवं रोष है। मांग उठ रही है कि मुगल सम्राट औरंगजेब को बर्बर शासक घोषित किया जाए और भारत में उसके नाम पर रखें गए सभी सड़कों और स्थानों के नाम बदलने के लिए गजट नोटिफिकेशन जारी किया जाए। जैसाकि संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने ओसामा बिन लादेन और फ़ांसीसी व रूसी क्रांति के अवशेषों के साथ किया था। किसी भी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण इतिहास के सच और ईमानदारी से ही बनता है। और यह सब प्राप्त करने के लिए ईमानदारी के साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार एवं समाज ईमानदारी से चलते एवं बनते हैं, न कि झूठे इतिहास से। सच को झूलाना, सच को ढकना एवं सच को अनभिज्ञता संसार में जितनी करूर है, उतनी करूर मृत्यु भी नहीं होती।

# हिंदूत्व की समां बंधने से बिहार के सियासी दलों की बेचैनी बढ़ी



दिवस ही क्या, पांच महीने तक हम हिंदुत्व के लिए कथा करते रहेंगे। विदेश से भी श्रद्धालु कथा का श्रवण करने पहुंचे हैं। इससे बागे श्रधाम सरकार श्री शास्त्री की लोकप्रियता और भी परवान चढ़ने लगी है।

चूंकि बिहार राज्य में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसको लेकर सभी दलों ने जोर आजमाइश भी शुरू कर दी है। इस लिहाज से मार्च के पहले-दूसरे सप्ताह में, वो भी होली से ठीक पहले बिहार में एक साथ आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, बागेश्वर सरकार धीरेंद्र शास्त्री और आर्ट ऑफ लिविंग

के संस्थापक श्रीश्री रविशंकर का दौरा करना महत्वपूर्ण है। इससे सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के लिहाज से सजग रहे बिहार में हिंदुत्व का एक नया उफान पैदा होगा, जिससे सूबे में भाजपा की जड़ें और मजबूती से जमेंगी।

चूंकि उड़ीसा विधानसभा चुनाव में जीत चुकी भाजपा झारखण्ड विधानसभा चुनाव में मुंहकी खा चुकी है। इसलिए आगामी बिहार विधानसभा चुनाव को वह हर हाल में जीतना चाहती है। चूंकि वह यहां पर जदयू के साथ चुनाव लड़ती आई है इसलिए वह विपक्षी पार्टी गजट और कांग्रेस को इन्होंने

कमजोर कर देना चाहती है कि उसके सहयोग से जदयू पुरानी बारगेनिंग करने लायक नहीं बचे। इसलिए वह इस बार जदयू की सीटों की संख्या को भी कतरने का मन बना चुकी है। यह सबकुछ करना इसलिए बेहद जरूरी है कि 2026 के पूर्वार्दध में ही पश्चिम बंगाल विधानसभा के चुनाव भी होने वाले हैं। जहां चुनाव जीतना दिल्ली के बाद मोटी सरकार की हिट लिस्ट में है।

सुनाव जाताना। दल्ला के बाद मादा संकर का हृत लिस्ट में ह। समझा जाता है कि एक के बाद एक यानी हरियाणा, महाराष्ट्र और दल्ली जैसी मूर्शिकल विधानसभा चुनावों में अपनी जीत का परचम लहरा चुकी भाजपा अब विहार में भी वही प्रयोग करने जा रही है। आरएसएस और अपनी आनुरोधिक इकाइयों के माध्यम से वह जन जन को साधना चाहती है, ताकि नीतीश कुमार पर मनोवैज्ञानिक दबाव बना रहे और सीटों के बंटवारे में वो कम सीट पर चुनाव लड़ने को राजी हो जाएँ। वहीं, यदि इसमें को अप्रत्याशित बाधा भी आए तो राज्य में हिंदुत्व की लहर दूरी पांच दो ता ति धार्मिकोंपांच और सामाजिक उत्त

इतना प्रचंड हा जाए कि धमानरपक्षता आर सामाजिक न्याय जैसी जातिवादी और धार्मिक सोच हवा-हवाई हो जाए। यही वजह है कि गोपालगंज में बागेश्वर सरकार धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के 5 दिवसीय हनुमंत कथा के आयोजन से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और पूर्व मुख्यमंत्री राजद नेता तेजस्वी यादव की सियासी नींद उड़ चुकी है। वहीं, प्रयागराज महाकुंभ के बाद भाजपा की राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय हवा बनी है, उससे भी ये नेता भीतर ही भीतर परेशान हैं तेजस्वी यादव और उनके समर्थक तो इस आयोजन को लेकर उटपटांग बयानबाजी भी तेज कर चके

वहीं, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के गृह जनपद गोपालगंज के भोरे प्रखंड के रामनगर स्थित श्रीराम जानकी मठ इन दिनों हिंदुत्व व सनातनियों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। यहां भारी संख्या में श्रद्धालु धीरेंद्र शास्त्री की कथा सुनने के लिए पहुंचे हुए हैं। इस श्रीराम जानकी मठ में धीरेंद्र शास्त्री ने कथा से पहले हिन्दुओं के अस्तित्व और उनकी सुरक्षा को लेकर बहुत बड़ा बयान दिया है। गुरुवार की देर शाम कथा वाचक धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि वे यहां अपने लिए थोड़े आए हैं, वे इस देश के हिन्दुओं को जगाने के लिए आए हैं।



## बीएमडब्ल्यू सवार युवक ने बीच सड़क पेशाब किया, गिरफतार

पुणे (एजेंसी)। पूणे के येवडा इलाके में शनिवार को बीएमडब्ल्यू सवार एक युवक ने बीच सड़क कर खड़ी कर डिवाइडर पर पेशाब कर दिया। घटना का वीडियो सोनम आया है, जिसमें एक युवक लाजरी बीएमडब्ल्यू कर से उतरता है, टैंकिक जंक्शन पर खुले आम पेशाब करता है। इसके बाद युवक मुख्कराते हुए गाड़ी में बैठकर फरार हो जाता है। घटना के दौरान किसी राहगीरी ने ये वीडियो बनाया। इस दौरान दोनों युवक मुख्कराते दिख रहे हैं। वीडियो की जाकारी मिलने के बाद पुलिस ने आरोपियों की तलाशी शुरू की। कुछ ही देर में युवक करने वाले युवक के साथ मौजूद उसके दोस्तों को गिरफतार कर लिया गया। रविवार को मुख्य आगोपी भी पकड़ा गया। पुणे पुलिस के मुताबिक कार में बैठा युवक का साथी भाग्यशंका सोसवाल था, जबकि पेशाब करने वाला गोल आहूजा। भाग्यशंका को पूर्ण से और गौरव को सतारा के कारबाह से गिरफतार किया गया है। दोनों आगोपी नशे में थे। वीडियो में भाग्यशंका के हाथ में बोतल भी दिख रही है। दोनों जाकर काट में पेश किया जायगा।

## चुनाव में मुप्त की रेवड़ियों के बाद से बचेगी भाजपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा अब चुनाव के दौरान मतदाताओं को तुलने के लिए मुप्त की घोषणाओं (फोटोज) पर ब्रेक लगाने की तैयारी में है। पार्टी ने फोटोज की जगह वैकल्पिक मॉडल तैयार किया है। इसमें खाते में सीधे शब्द ट्रांसफर या अन्य छूट (नॉन रफर्मेंस एक्सेप्टेंसिव) की जगह कामकाज को बढ़ाने और ऐसे मर्दों के लिए अधिक मदद की घोषणा होगी, जिससे राज्य की जीड़ीपी को गति मिले। एन मॉडल की शुरूआत 2026 में होने वाले असम विधानसभा चुनाव से होगी। भाजपा यह व्यवस्था उन्हें राज्यों में लागू करेगी, जहाँ पार्टी खुद सरकार में है या मुख्य विधायिक दल की भागीदारी है। यह जहाँ नेपोडें दम पर चुनाव लड़ेगी। जहाँ हमने से फोटोज की घोषणा हो चुकी है या पार्टी ने जिसका बाबा किया है, वह जारी रहेगा, पर आवाले चुनाव में वहाँ भी नया मॉडल लागू होगा। यानी 2028 के बाद भाजपा शासित सभी राज्यों में यह व्यवस्था होगी। भाजपा की कई मैटिफटों के मध्ये से लंबे समय से जुड़े रहने वाले एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि दिल्ली चुनाव के दौरान ही शीर्ष नेतृत्व ने अगले चुनावों में जीड़ीज की वैकल्पिक मॉडल अपनाने के लिए रणनीति बनाने का विचार रखा था।

## जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी-बारिश थमी, तापमान बढ़ा

जम्मू/भोपाल/नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी का दौर फिलहाल थम गया है। प्रशासन ने सड़कों पर जम्मू बर्फ हटायी, जिससे रास्ते खुले सके। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर के तापमान में भी बढ़दी हुई है। विमानलं प्रदेश में 10 मार्च से यांत्रिक बदलता गया। जम्मू-कश्मीर के साथ उत्तराखण्ड में लैंडलॉइड व बर्फ के पहाड़ खिसक सकते हैं। मध्य प्रदेश में बर्फीली हवाओं का असर घटने लगा है। दिन का पारा 36 एष्ट तक पार पहुंच गया है। मौसम विभाग के मुताबिक 15 मार्च के बाद तेजी से गर्मी बढ़ेगी। बोते चार दिन में रात का पारा 6 एष्ट तक पहुंचा था।

## जम्मू-कश्मीर सरकार टीटवाल में शारदा मंदिर में 'यात्री निवास' बनाने की योजना बनी है-उमर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को कहा कि उनकी सरकार दो साल पहले नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास टीटवाल में खाले गए शारदा मंदिर में 'यात्री निवास' बनाने की योजना बनी है। विधानसभा में नेशनल कॉर्फेस के विधायक जाविद अहमद मिरचल के ताराकित प्रश्न का उत्तर देते हुए उहोंने 2023 में नियंत्रण रेखा के पास अंतिम गांव टीटवाल में मंदिर में 'यात्री निवास' और जलपान घर के निर्माण के लिए एक विस्तृत परियोजना प्रगति पर है। शारदा बचाओ समिति ने कहा कि 1.5 करोड़ रुपये हैं। शारदा देवी की स्थापना की, जो तीर्थयात्रियों के लिए आधार शिविर के रूप में कार्य



